>

Title: Need to label the names of the medicines in Hindi and Regional languages besides English on the bottles and wrappers.

श्री विरेन्द्र कुमार (सागर): सभापति महोदय, हमारे देश में प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में रोगी गलत दवा का उपयोग करने से समय से पहले स्वर्ग सिधार जाते हैं तथा बड़ी संख्या में विकलांग अथवा ब्रेन डेड हो जाते हैं। डॉक्टरों द्वारा मरीज को जो दवा का पर्चा बनाया जाता है, वह लिखाई इतनी अस्पष्ट एवं न पढ़ी जा सकने वाली होती है कि जब मरीज दवा दुकान पर जाता है तो वहां मालिक के दवा देने वाले कम पढ़े लिखे लोग भ्रमित होकर कुछ की कुछ दवा दे देते हैं जैसे कॉरफलो की जगह कॉरफ्लेम, आइसोर्डिल की जगह फार्मासिस्ट ने प्लेंडिल दे दी। नतीजा मरीज को ह्रदयाघात हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 5000 ब्रांड नामों से दवाएं बिक रही है, जिनमें से आधे से ज्यादा नाम आपस में मिलते जुलते हैं। डॉक्टर की लिखी दवाएं सिर्फ नर्स या दवा विक्रेता ही पढ़ सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो बहुउद्देशीय दुकानें होती हैं, जहां किराना, कपड़ा, लोहा और दवाएं एक ही दुकान पर मिलती हैं। कम पढ़े-लिखे लोग मिलती-जुलती दवाएं दे देते हैं, जिससे रोगी सांसत में पड़ जाते हैं।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि दवाओं की शीशी एवं रेपरों पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में भी दवा का नाम लिखा जाना चाहिए[r66]।

भारत में लगभग 80 प्रतिशत जनता ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। अपनी मातृभाषा के बाद उनका सीधा सम्पर्क हिन्दी से होता है, इसलिए हिन्दी को चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों द्वारा अपनाये जाने पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।